अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

बाल साहित्य का वर्तमान औ चत्य

डा. नी लमा दुबे
एसो शएट प्रोफेसर
न्यू होराईज़न कालेज, कस्तूरी नगर,बैंगलूरू

भू मका

आज भारत को वश्व का सबसे बडा तरूण व युवा देश कहलाने का सौभाग्य प्राप्त है, क्योंकी हमारी जनसंख्या का अ धकांश भाग युवा है।यह स्थिती जितनी गौरावशाली है उतनी ही संवेदनशील भी। अगर युवा अनुशासन और संस्कार के मूल्य नहीं समझते तो देश की उर्जा को सही दिशा दे पाना मुश्किल ही नहीं नामुम कन हो जायेगा , तथा दिशा निर्धारण की यह महती तैयारी की जिम्मेदारी देश के बालकों यानि उनके बचपन से ही आरंभ होनी चाहिए। बाल मनो वज्ञान के अनुसार बच्चे के जन्म से लेकर लगभग आठ वर्षों तक का वकास कसी भी बालक व बा लका के जीवन की नींव होता है । इस कालाव ध में वे सबसे अ धक चंचल, मासूम, निरीक्षक,उत्सुक और निर्भय होते हैं। उनका मस्तिष्क सीखने के लए इतना सश्क्त होता है क वे दुनिया क तमाम भाषाएं सहज ही सीखने की योग्यता रखते हैं। ऎसे में बाल्यकाल में वे जो साहित्य पढें वह संस्कार , नैतिकता व संस्कृति के मूल्यों से भरा हो यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। वर्तमान समय वश्वग्राम चेतना के साथ आगे बढने का समय है, तो हम चतकों के लए यह सोचने श्रेष्ठ बाल साहित्य रचने का जिससे हमारे देश के कर्णधार न केवल देश के लए वरन वश्व के लए उत्तम नागरिक बन सकें।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हम में से कौन है जिसने पंचतंत्र की कहानियां नहीं पढी? सघासन बत्तीसी के बारे में मालूम नहीं? चाचा चौधरी की चतुराई से बचपन में हैरान नहीं हुआ ?टिल्लू की शैतानियों से खुद को नहीं जोडा ? लंबू और छोटू के कारनामे जानने के लए घंटों तक एक जगह पर कताब नहीं पढते रहे? और हां चंपक? आज भी याद है । उसका हर पेज कतने ध्यान से पढा जाता था। उम्र कतनी भी होजाय कोई भी अपना बचपन कभी नहीं भूलता। यही कारण है क अबोध अवस्था का साहित्य व्यक्तित्व के वकास के लक्ष्य को ध्यान में रख कर ही होना चाहिये।

बाल साहित्य के बारे में आरंभ में केवल तुलसीदास सूरदास के काव्य या नीति संबंधी रचनाएं ही मलति हैं। परंतु बाल पत्रकारिता की शुरूवात भी उन्नीसवी सदी से देखी जा सकती है। यह वहि समय है जब बाल पत्रिकाओ के बारे में सोचा गया। साथ ही यह भी महसूस कया गया क बच्चों के वकास में तथा उनकी दिशा निर्धारण में इस साहित्य की अहम भू मका हो। स्कूली पाठयक्रम से अलग यह ऐसा साहित्य हो जो बालकों को प्रेरणा देसके। परिणामस्वरूप हिन्दी में बाल सखा , शशु, नंदन, बाल्विनोद पराग ,चंदामामा, चकमक, बाल भारती आदि पत्रिकाएं उदित हुई। इन्होने स्वस्थ बाल साहित्य रचने प्रयास तो कया परंतु अनेक प्रकाशन असमय ही बंद हो गये , यह एक वडंबना ही कही जा सकती है।

बाल दर्पण जो बाल साहित्य की पहली पत्रिका मानी जाती है , उसके तथा आजकल की सामग्री पर नजर डाले तो जमीन आसमान का अंतर दिखाई देता है। यद्य प व्यावसायिकरण के चन्ह हैं परंतु अनेक शै लयों मे मनो वज्ञान की दृष्टि से इस साहित्य केनिर्माण को देखा जा सकता है।बाल नाटककार अपना योगदान देने में सदा प्रयासरत है जैसे - नर्मदा प्रसाद खरे , वष्णु प्रभाकर, रामनरेश त्रिपाठी, डा. हरिकृष्ण देवसरे आदि। उदा.

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हाथ के पंजे की अम्गु लयां अपने को श्रेष्ठ बताती हैं कतु नाट्क ' हम सब एक समान ' का अंगुठा (दादा) सबको एक समान बताता है-

'हम सब एक समान

भन्न- भन्न आकार भले हो

भन्न हमारे काम भले हों

जब मलते हैं तब होते हैं हम सब एक समान॥

उम्ग ल अलग न कुछ कर पाती

मल जाती थप्पड बन जाती

दादा का भी साथ मला तो

फर मुक्का बलवान॥

दादा हम सब एक समान॥'

इस प्रकार बाल गीत भी उनके मनोभावों को वक सत करते दिखाई देते हैं-

१-मेरी नानी बडी सयानी

कहती रहती नयी कहानी

एक था राजा एक रानी

राजा सुन्दर रानी कानी

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

२- बुंदेले हरबोलो के मुह

हमने सुनी कहानी थी

खूब लडी मर्दानी

वह तो झांसी वाली रानी थी

बालक प्रकृति से जिज्ञासु होते हैं । सब कुछ जान लेने की अदम्य आकांक्षान केवल उन्हे समाज से परिवार से सब कुछ प्राप्त करने की प्रेरणा देती है अ पतु बाल साहित्य के अनुशीलन से भी वह अपनी ज्ञान क्षुधा को तृप्त करना चाहता है।

बाल साहित्य का मुख्य आधार जीवन है। जीवन के ये अनुभव होते है जिन्हे रचनाकर अपने परिवार, मत्र,और आस-पास से प्राप्त करते हैं यही सरलता व कोमलता जैसे भाव उनाका दुलार करते हैं, तथा कटुता व कुटिलता को दूर रखते हैं। बचपन का ये अनुभव जीवन भर चलता है। ऎसे में यह बाल साहित्य हामेशा उनका मार्गदर्शन करता रहता है।

यह सच है क वर्तमान में व वध वधाओ के माध्यम से हिन्दी बाल साहित्य की रचनाओ पर बल दिया जा रहा है चाहे वह बाल कहानियां हों , बाल उपन्यास हों,एकांकी हों,गीत आदि हों। आज भी इनमें मनो वज्ञान और मनोरंजन के साथ ऎतिहा सक पौरा णक तथा लोक कथाओ को जोडे रखना होगा ,जिससे उनके उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का वकास हो सके , क्योंकी आज के बालक कल के भावी नगरिक हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

संदर्भ ग्रंथ-----

१- हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा, डा. श्रीप्रसाद
२- हिन्दी बाल साहित्य : आवश्यक्ता एवं महत्व, डा. रेखा जोध,डा. राजेश कुमार
३- हिन्दी बाल साहित्य का ववेचनात्मक अध्ययन , मस्तराम कपूर,
४- भारतीय बाल साहित्य के व वध आयाम (हिन्दी बाल सहित्य के वकास में बाल पत्रिकाओ का योगदान- डा. सुरेन्द्र वक्रम) पृ.२६५